IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गाँधीयुग में लखनऊ एवं प्रयागराज की महिला स्वतंत्रता सेनानी

रूपा श्रीवास्तव

शोधार्थी– इतिहास विभाग,

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,

लखनऊ, उ.प्र.

डॉ. पूनम चौधरी

सहायक आचार्य, विषय प्रभारी – इतिहास विभाग

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय लखनऊ, उ.प्र.

अमूर्त – भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिला स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा दिए गए योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। उस समय में जब महिलाएँ घर परिवार तथा समाज के डर के कारण घर की देहरी नहीं लाँघती थी। महिलाओं को पर्दे के पीछे रखा जाता था। उस समय में हमारे देश की महिला स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को स्वतंत्र करवाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने वाली महिलाएँ न केवल शिक्षित, उच्च कुल की थी बल्कि सभी वर्ग, जाति, धर्म, समुदाय से थी। महिलाओं ने वीरता के साथ स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई लड़ी। दुर्भाग्यवश कुछ ऐसी भी महिलाएँ थी जो इतिहास के पन्नों में ज्यादा उभर कर नहीं आयी लेकिन उनका योगदान उतना ही रहा जितना अन्य स्वतंत्रता सेनानियों का था। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का साहस एवं समर्पण इतिहास का अभिन्न अंग है।

कीवर्ड – स्वतंत्रता सेनानियों, अनदेखी, देहरी, स्वतंत्र, उच्च कुल, वर्ग, समुदाय, जाति, वीरता, दुर्भाग्यवश, पन्नों, उभर, अभिन्न।

प्रस्तावना – भारतीय स्वाधीनता संग्राम साहस एवं बलिदान की गाथा है। भारत को स्वतंत्र कराने के लिए महिलाओं ने पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया। महिलाओं ने कई चुनौतियों, कठिनाईयों, पीड़ा एवं शोषण का सामना करते हुए भारत की परतंत्र की बेड़ियों को खोलने में सहायता की। कई ऐसी महिला स्वतंत्रता सेनानियाँ थी जिनके आख्यान ऐतिहासिक चर्चा में दब गए लेकिन उनके द्वारा दिया गया योगदान निर्विवाद है। इन महिलाओं ने महिला सशक्तिकरण का उदाहरण प्रस्तुत किया तथा भारत को स्वतंत्र एवं संप्रभु राष्ट्र बनाने में अपना योगदान दिया। महिला एवं पुरूष दोनो के अदम्य साहस से एक स्वतंत्र राष्ट्र की नींव रखी गई। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से मैं लखनऊ एवं प्रयागराज की उन स्वतंत्रता सेनानियों का उल्लेख करूँगी जिन्होंने हमारे भारत देश को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने में अपना बहूमूल्य योगदान दिया।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रतिभाग लेने वाली लखनऊ एवं प्रयागराज की महिलाएँ।

आनंदी देवी – आनंदी देवी लखनऊ में कांग्रेस की सक्रिय सदस्य थी। गाँधी जी ने नेतृत्व में चलाए गए असहयोग आन्दोलन में लखनऊ से आनंदी देवी ने अन्य महिलाओं के साथ पूरे जोर शोर से भाग लिया। विदेशी वस्त्रों की होली जलाई।[1] सभाओं का आयोजन किया। इन्हें अंग्रेजों ने पकड़ लिया तथा उन्हें 6 माह के कारावास की सजा हुई। जेल से छूटने के बाद पुनः गाँधी जी द्वारा चलाए गए आन्दोलनों में भाग लिया। कई बार जेल की यात्राएँ भी की।[2]

आबिदाबानो बेगम – आबिदाबानो बेगम अली बन्धुओं (मुहम्मद अली, शौकत अली) की माता थी। असहयोग आन्दोलन के समय आबिदा बानो बेगम ने लखनऊ में तथा भारत के कई राज्यों में सभाओ का आयोजन किया। लोगो को स्वदेशी अपनाने को कहा। बेगम ने आन्दोलन को सफल बनाने के लिए चन्दा एकत्र किया। अंग्रेजो ने अन्हें गिरफ्तार कर लिया। आबिदा बानो बेगम ने कहा था – "अपनी संतान के लिए व्यक्ति को मकान तथा सोना चाँदी नहीं बल्कि 'स्वराज' छोड़कर दुनिया से अलविदा लेना चाहिए।"[3] आबिदा बानो बेगम ने कौमी एकता का सन्देश दिया। गाँधी जी ने उनके बारे में कहा था – "उनके कार्य हमें सफलता प्रदान करने में सहयोग प्रदान करेंगें।" 1924 ई. में आबिदा बानो बेगम की 70 वर्ष की उम्र में मृत्यु हो गई।[4]

स्वरूपरानी नेहरू – स्वरूपरानी नेहरू पं. जवाहरलाल नेहरू की माता थी। इन्होंने प्रयागराज में राष्ट्रीय आन्दोलन को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। उन्होंने कहा था– "भारत की जेल पुरूषों के लिए ही नहीं बल्कि महिलाओं के लिए भी है। स्वतंत्रता की लड़ाई रूकनी नहीं चाहिए।"[5] साइमन कमीशन के विरोध में प्रयागराज में जुलूस का नेतृत्व किया। छात्र–छात्राओं को जुलूस में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान 1932 ई. में धरना दिया जिसमें उन पर भी लाठियाँ चलाई गई जिसके कारण उनके सिर पर चोटें लगी थी। स्वरूपरानी नेहरू ने

कहा था – "विदेशी कपड़े हमारे देश के भाई, बहनों के रक्त से सने हैं, ऐसे वस्त्रों को हमें नहीं पहनना चाहिए।"[6] वे जब तक जीवित रही, भारत की आजादी के लिए प्रयत्न करती रही। 10 जनवरी 1938 ई. को उनकी मृत्यु हो गई। कृष्णा नेहरू ने उनके बारे में कहा था– "यह बड़ी असाधारण बात है, कि एक छोटी हिन्दू महिला जिसका जन्म अत्यन्त समृद्ध परिवार में हुआ है, जो आराम की जिन्दगी जीने वाली महिला थी तथा पर्दा जैसी रूढ़िवादी परम्परा की थी। वह क्रान्तिकारी वक्ता एवं स्वतंत्रता सेनानी बन गई।"[7]

बेगम अब्दुल कादिर – बेगम अब्दुल कादिर लखनऊ में सक्रिय थी। उन्होंने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। साइमन कमीशन के विरोध में कुछ लोगो के द्वारा जुलूस निकाला गया था जिसका नेतृत्व बेगम अब्दुल कादिर ने किया।[8] उन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय लखनऊ में सभाएँ की और लोगो से स्वदेशी अपनाने की अपील की।[9]

सुनीति देवी मित्रा – लखनऊ की स्वतंत्रता सेनानी थी। असहयोग आन्दोलन में भाग लिया तथा जेल की यात्रा की थी। साइमन कमीशन के विरोध में एक जुलूस अमीनाबाद से निकाला गया उस जुलूस का नेतृत्व सुनीति देवी मित्रा ने किया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय सुनीति देवी मित्रा के नेतृत्व में 4 मई 1930 ई. को एक जुलूस हजरतगंज पहुँचा।[10] हजरतगंज थाने की पुलिस ने उनको थाने में बन्द कर लिया तथा अन्य महिलाओं को जंगलो में छोड़ दिया गया। सुनीति देवी मित्रा को 1932 ई. में तीन माह के कारावास एवं 200/– रूपये का जुर्माना का सजा हुई। सुनीति देवी मित्रा ने लखनऊ में विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार आन्दोलन को भी सफल बनाया।[11] मुस्लिम जनता को विदेशी टोपी के स्थान पर खादी की टोपी खरीदने को कहा जिसमें वे सफल भी हुई। 1937 ई. के चुनाव में सुनीति देवी मित्रा रायबरेली जिले से 77.70 प्रतिशत वोट से जीती तथा विधानसभा की सदस्या बनी।[12]

कांति देवी अवस्थी – कांती देवी अवस्थी लखनऊ में सक्रिय थी। असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित हुई थी। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सम्मिलित हुई थी। उन्होंने विदेशी वस्त्रों की दुकानों के सामने पिकेंटिग की। किसी को भी विदेशी वस्त्र नहीं खरीदने दिया। लोगो से स्वदेशी अपनाने एवं उनके सहयोग की अपील की।[13] कान्तीदेवी ने जमुना पार्क में महिलाओं को साथ मिलकर नमक बनाया। इन्होंने धारा 144 का उल्लंघन किया। अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार भी कर लिया। इन्होंने व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन (1940 ई.) में भी भाग लिया। अंग्रेजों ने उन्हें बन्दी बना लिया। उनको 3 माह के कारावास एवं 100/– रूपए जुर्माने की सजा दी गई।[14]

प्रयागराज में नेहरू जी का घर आनंद भवन न केवल घर था बल्कि राष्ट्रीय गतिविधियों का केन्द्र भी था। घर की महिला सदस्यों जैसे – स्वरूप रानी, कमला नेहरू, उमा नेहरू, रामेश्वरी नेहरू, कृष्णा नेहरू, विजयलक्ष्मी पंडित ने भी आन्दोलनों में भाग लिया।[15]

उमा नेहरू – उमा नेहरू ने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भी शामिल हुई। प्रयागराज मं नमक बनाया। अंग्रेजी सरकार को चुनौती दी कि अगर हिम्मत है, तो रोक ले। उनके साथ सुन्दर देवी एवं रामलली देवी भी शामिल थी। प्रयागराज में विदेशी वस्त्रों की दुकानों से कपड़ा बिकने नहीं दिया। तिरंगा को फहराया। उमा नेहरू ने कांग्रेस महिला विभाग का गठन किया जिसे व्यक्तिगत सत्याग्रह से जोड़कर आन्दोलन को सफल बनाने का काम उमा नेहरू को दिया गया था। वह सत्याग्रह सेना की सक्रिय सदस्य थी। उन्होंने कई बार जेल का यात्राएँ की इसलिए उन्हें 'जेल की चिड़िया' कहा जाता था।[16] उमा नेहरू ने कहा था – "धरना प्रदर्शन कार्यक्रम में पुरूष स्वयं सेवकों की आवश्यकता नहीं है। महिला स्वयंसेवको की संख्या पर्याप्त है।" उमा नेहरू ने प्रयागराज की पत्रिका चाँद के विदुषी अंक में 'रोक ऑफ वूमेन इन मैरेज' लेख लिखकर महिलाओं को जागरुक किया। इन्होंने 10,000 स्वयंसेवको एवं स्वयंसेविकाओं के साथ नमक बनाया। 'लीडर' समाचार पत्र ने लिखा था – "उमा नेहरू नेतृत्व में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार सफल हुआ। एक गज कपड़ा भी बिक नहीं पाया है।"

1937 ई. के चुनाव में उमा नेहरू फर्रूखाबाद से विजयी रही। वे निरन्तर भारत की आजादी के लिए प्रयत्न करती रही।[17]

कमला नेहरू – कमला नेहरू पं. जवाहरलाल नेहरू की पत्नी थी। कमला नेहरू में भारत को आजाद कराने की प्रबल इच्छा थी इसलिए अस्वस्थता के बावजूद उन्होंने देश की आजादी की लड़ाई में भाग लिया। 'स्त्री दर्पण' पत्रिका राष्ट्रीय समस्याओं के साथ–साथ महिला अधिकार से भी संबंधित थी। इस पत्रिका के प्रकाशन पर होने वाला व्यय कमला नेहरू स्वयं वहन करती थी।[18] वे 'ऑल इण्डिया वूमेन्स कान्फ्रेंस' की अध्यक्षा भी चुनी गई। कमला नेहरू राष्ट्रीय कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की सदस्या एवं प्रयागराज शहर कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षा भी रही थी। कृष्णा नेहरू ने उनके बारे में कहा था– "कमला नेहरू में देश प्रेम का अद्भुत जज्बा था जिसे कोई भी बीमारी हरा नहीं सकती थी।" कमला नहेरू ने विदेशी वस्त्रो के बहिष्कार के लिए महिला टोली बनाई जिसके अन्तर्गत धरने पर बैठी एक महिला टोली के जाने के बाद उसका स्थान दूसरी महिला टोली ले लेती थी।

कमला नेहरू ने नमक सत्याग्रह के समय स्वयं नमक बनाया था। उनको जेल में भी डाल दिया गया था किन्तु अस्वस्थता के कारण उन्हें रिहा कर दिया गया। कमला नेहरू ने कहा था – "मैं अपने पति पं. जवाहरलाल नेहरू के पद्चिन्हों पर चलकर विशेष गौरवान्वित हूँ। मैं आशा करती हूँ कि भारतीय जनता तिरंगे को सदा लहराती रहे।" 28 फरवरी 1936 को स्विट्जलैण्ड में उनकी मृत्यु हो गई।[19]

श्याम कुमारी – नेहरू परिवार में इनका जन्म हुआ। इन्होंने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। श्याम कुमारी प्रतिदिन 'दि इंडिपेंडेंट' नामक अखबार की 500 प्रतियाँ हाथ से लिखती थी। असहयोग आन्दोलन के समय 'डेमोक्रेट' नामक साप्ताहिक पत्र इनके पिता द्वारा निकाला गया था जिसको श्याम कुमारी हाथ से मशीन चलाकर उसका प्रकाशन करती थी।[20] 1931 ई. में उन्होंने जेल की यात्रा भी की। वे स्वतंत्रता सेनानी के साथ ही समाजसेविका भी थी। 1953 ई. में वे संयुक्त राष्ट्र संघ की आर्थिक एवं सामाजिक संस्था की वैकल्पिक सदस्या भी रही।[21]

रामेश्वरी नेहरू – इनका विवाह पं. मोतीलाल नेहरू के भतीजे पं. ब्रजलाल नेहरू के साथ हुआ था। इन्होंने 1909 ई. में 'प्रयाग महिला समिति' की स्थापना की जिसका उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार करना तथा उनमें राजनीतिक जागृति पैदा करना था। 'स्त्री दर्पण' का प्रकाशन रामेश्वरी नेहरू ने किया था। हरिजन सेवक संघ में वे गाँधी जी का दाहिना हाथ थी।[22] भारत छोड़ो आन्दोलन के समय 'स्त्रियों से अपील' शीर्षक से एक पम्फलेट निकालकर प्रदेश की महिलाओं को आन्दोलन में शामिल होने की अपील की। उन्होंने महिलाओं को कांग्रेस की वेशभूषा 'केसरी साड़ी' पहनने को कहा। उन्होंने महिलाओं से अपील की कि वे कांग्रेस के संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाए। आन्दोलन के महत्व को लोगो के घर–घर जा के बताए। सरकारी अफसरों के घर पर महिलाएँ काम न करें। इस स्वतंत्रता सेनानी की 1966 ई. में मृत्यु हो गई।[23]

श्रीमती मालवीय– ये पं. मदनमोहन मालवीय की बहू थी। 1932 ई. में विशाल जुलूस का प्रयागराज में उन्होंने नेतृत्व किया। प्रयागराज के घंटाघर में इन्होंने तिरंगे को फहराया। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उन्हें एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा हुई। श्रीमती मालवीय ने समाज सेवा के क्षेत्र में भी कार्य किया।[24]

स्वाधीनता संग्राम में महिलाएँ पुरूषो के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आजादी की लड़ाई लडी इस प्रक्रिया के फलस्वरूप वे जिन जंजीरो में बंधी थी वे अपने आप टूटकर गिर गयी। समाज के रूढ़िवादी सोच के बीच भी इन महिलाओं ने इतिहास के पन्नों में अपना नाम सदैव के लिए दर्ज करवा लिया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1– निजामी, तबस्सुमः लखनऊ जनपद का राष्ट्रीय इतिहास. लखनऊः उ0प्र0 साहित्य सदन, 1961. पृष्ठ 65

2– वही।

3– दीक्षित, स्मिता. भारतीय स्वाधीनता संघर्ष एवं उत्तर प्रदेश की महिलाएँ (1920–1947). दिल्लीः बी0आर0 पब्लिशर्स कॉरपोरेशन, 2013. पृष्ठ 79–80

4– वही।

5– पांडेय, विनय चंद्र. एवं सिंह, सुनीत. स्वतंत्रता आन्दोलन एवं उत्तर प्रदेश. नई दिल्लीः ए0पी0एच0 प्रकाशन, 2000. पृष्ठ –246

6– वही।

7– दीक्षित, स्मिता. पूर्वोक्त, पृष्ठ–114

8– वही, पृष्ठ – 82

9– वही।

10– निजामी, तबस्सुम. पूर्वोक्त, पृष्ठ 159

11– वही पृष्ठ 159–160

12– वही।

13– वही पृष्ठ दृ 254–255

14– वही।

15– मजूमदार, आर0पी0 हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट इन इण्डिया, वाल्यूम तीन. कलकत्ताः फर्मा के0एल0 मुखोपाध्याय, 1968. पृष्ठ–707

16– दीक्षित, स्मिता. पूर्वोक्त, पृष्ठ–124

17– वही. पूर्वोक्त, पृष्ठ–125

18– वही. पूर्वोक्त, पृष्ठ–120

19– वही. पूर्वोक्त, पृष्ठ–121

20– डॉ. बाला, ऊषा – भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी (1857–1947). नई दिल्लीः भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 1988. पृष्ठ 159

21– वही।

22– वही, पृष्ठ – 138

23– वही, पृष्ठ – 139

24– वही, पृष्ठ – 204